P.G.
SEM-II
Paper - 9

डा० कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग,
महाराजा कॉलेज

प्रश्न - 'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यास के आधार पर भट्टिनी का चरित्र चित्रण करें।

उत्तर- 'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यास आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित है। औपन्यासिक कला की दृष्टि से भट्टिनी उपन्यास की नायिका ठहरती है। यद्यपि पूर्ण फल प्राप्ति तो उससे नहीं हो पाती है तथापि संपूर्ण आत्मकथा का आधार वही बनी है। बाणभट्ट की दृष्टि में भी उसकी आत्मकथा का केन्द्र बिन्दु वही है। भट्टिनी का नाम तो चन्द्रदीधिति है किन्तु कथा में वह भट्टिनी के नाम से ही पुकारी जाती है। उपन्यासकार ने उसे देवपुत्र तुवरमिलिन्द की कन्या बताया है पर वास्तव में वह कल्पित पात्र है। कथा के अनुसार प्रत्यन्त दस्युओं द्वारा उसका अपहरण करने के उपरान्त वह बेच दी जाती है और फिर किसी प्रकार मौखरिवंश के छोटे राजकुल के अंतःपुर में पहुँचा दी जाती है। यह राजकुल वासना का पुंज था। वहाँ से निपुणिका एवं बाण के सहयोग से उसे किसी तरह मुक्ति मिल जाती है। कुल मिलाकर भट्टिनी के चरित्र में निम्नलिखित गुण देखे जा सकते हैं—

① अलौकिक सौन्दर्यशालिनी :- भट्टिनी राजकुल की कन्या होने के कारण सुन्दर थी। उसकी रूपराशि में ऐसी विलक्षण पवित्रता थी कि समस्त कलुष उससे धुल जाते थे। उसके सौन्दर्य से प्रभावित होकर स्वयं बाणभट्ट कहता है।

"मानो विधाता ने स्वयं शंख से खोदकर, मुक्ता से खींचकर, मृणाल से सँवारकर, चन्द्रकिरणों से कूर्चक से प्रक्षलितकर सुधाचूर्ण से धोकर, रजत रज से पोंछकर, कुटज कुंद और सिन्धुवार पुष्पों की धवल कान्ति से सजाकर ही उसका निर्माण किया था।"

② अतृप्त प्रेम की प्रतिमूर्ति :- भट्टिनी के हृदय में बाणभट्ट के प्रति अतिशय प्रेम है। वह उसे अपना सर्वस्व मानती है किन्तु न तो उसका प्रेम वासनापरक

है न उसे प्राप्त कर लेने की ललक। वास्तव में वाण के प्रति उसका प्रेम भावनात्मक है। उसमें उदात्तता भी है और गरिमा भी। वह वाण के प्रति समर्पिता है किन्तु अपने प्रेम को कभी तृप्त नहीं होने देती। यद्यपि प्रारंभ में वह अपने मुख से वाण को यह कभी नहीं बताती कि वह उसे प्यार करती है किंतु महामाया के सामने वह खुल जाती है। वास्तविकता यही है कि वाण के प्रति जो भट्टिनी का प्रेम है वह सांसारिक न होकर लोकोत्तर अन्यथा निपुणिका के प्रति उसे ईर्ष्या होनी चाहिए थी या बदले की भावना होनी चाहिए थी। उसका प्रेम उच्च आदर्श सम्पन्न है और उसमें दैहिकता या मांसलता का नामो निशान तक नहीं है।

③ स्वाभिमानिनी :– अतुलित सुन्दरी होने के कारण उसे पुरुष वर्ग की कुदृष्टि का शिकार हो उसे अंतःपुर के घृणित जीवन बिताने को विवश होना पड़ा। न जाने कहाँ कहाँ वह भटकती फिरी फिरभी कहीं भी उसने अपने स्वाभिमान का परित्याग नहीं किया। बाण एवं निपुणिका के प्रयासों से जब वह अंतःपुर से मुक्त हो गयी तब उसे कुमार कृष्णवर्धन के सहायता की आवश्यकता थी। वह अपने हितचिन्तक आचार्य सुगतभद्र के प्रस्ताव को ठुकरा देती है :–

"मैं स्थानवीश्वर के राजवंश से घृणा करती हूँ। राजवंश से संबद्ध किसी व्यक्ति का आश्रय पाने से पहले मैं यमराज का आश्रय ग्रहण करूँगी। भद्र आचार्यपाद ने मेरी कल्याण-कामना के भ्रम से मेरा सत्यानाश किया है।"

④ भगवान महावराह की अनन्य सेविका – उपन्यास के प्रारंभ में ही हमें भट्टिनी के भक्त स्वरूप दर्शन होते हैं और अंत तक उसमें भगवान महावराह के प्रति अगाध आस्था एवं श्रद्धा परिलक्षित होती है।

उसकी दृष्टि में न जीवन का महत्व है न मरण का। सब कुछ महावराह का है और उनकी इच्छा पर निर्भर है। वह उनकी पूजा किए बिना कोई कार्य नहीं करती थी। यहाँ तक कि अन्न जल भी पूजा के बाद ग्रहण करती थी। एक बार परिस्थितिवश उसे गंगा में कूदना पड़ा तो भी वह मूर्ति को लिए ही कूद पड़ी।

(5) मानवतावादिनी – भट्टिनी विश्व मानवतावाद की पोषक है। वह न देश को न राष्ट्र को महत्व देती है। क्योंकि इन्ही भावनाओं से मनुष्य को प्रतिक्रियावादी बना दिया है। जातिवाद, सम्प्रदायवाद और ऊँच-नीच को प्रश्रय देने से हमारी समाज व्यवस्था इतनी जटिल हो गयी है कि भट्टिनी उससे घृणा करने लगती है। उसके विचार में अन्य जातियों के अच्छे विचारों को लेकर तथा उन्हे अच्छे विचार देकर विश्व शांति के मार्ग को प्रशस्त किया जा सकता है। वह इस विषय में अपनी विचार प्रकट करते हुए बाणभट्ट से कहती है- "यही देखो, तुम किसी यवन कन्या से विवाह करो तो इस देश में भयंकर सामाजिक विद्रोह माना जाएगा। परंतु क्या सत्य नहीं है कि यवन कन्या भी मनुष्य है और ब्राह्मण युवा भी मनुष्य है। क्यों भट्ट, ऐसा नहीं हो सकता कि ऊँची भारतीय साधना उन तक पहुँचायी जा सके और निकृष्ट सामाजिक जटिलता यहाँ से हटायी जा सके। जब ये दोनों बातें साथ-साथ नहीं हो जाती तब तक शाश्वत शांति असम्भव है।"

⑥ निष्कपट चरित्र :- भट्टिनी दुःखिनी एवं प्रताड़िता अवश्य है परन्तु फिरभी उसके मन में किसी के लिए न तो कपट है न ही द्वेष। सांसारिक छल कपट से सर्वथा दूर उसका चरित्र उज्ज्वल है। बाणभट्ट उसे देखकर यहाँ तक कह देता है कि उसके स्पर्श मात्र से कल्मष प्रक्षालित हो उठता है। निष्कपट भट्टिनी के सामने उसके प्रेमी पाँवों पर निपुणिका अचेत

Date

पड़ी थी फिर भी वह कह रही थी "मत छुड़ाओ भट्ट! उसे शांति मिल रही होगी।"

निष्कर्ष :- इस प्रकार भट्टिनी के चरित्र में हमें वे सभी गुण परिलक्षित होते हैं जो उसे उच्च मानवी सिद्ध करते हैं। निष्कपटता, सहनशीलता, कृतज्ञता, ज्ञान विवेक आस्था एवं श्रद्धा तथा अप्रतिम सौन्दर्य शालिनी होने के साथ हीं पवित्र प्रेम का जो आदर्श उसने प्रस्तुत किया है वह महान है।